समाज: अर्थ और इसके संस्थान

डॉ० प्रवीण कुमार तिवारी

सह आचार्य

शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

- मनुष्य स्वाभाविक रूप से सामाजिक प्राणी है। जो भी व्यक्ति स्वाभाविक रूप से असामाजिक है, उसे हम या तो अत्यंत निचले स्तर का या फिर अत्यंत विशेष स्तर का मानते हैं। समाज व्यक्ति का निरंतर उन्नयन करता है। ऐसा कोई भी व्यक्ति जिसे एक बेहतर जीवन जीने के लिए समाज की आवश्यकता नहीं है वह या तो जंगली जानवर की तरह है या फिर वह भगवान है।

– अरस्तु

समाज का अर्थ

सामान्य अर्थों में 'समाज' का तात्पर्य व्यक्तियों के समूह से है। मानव एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक आवश्यकतायें समाज में ही पूरी होती हैं, जिसके लिए वह समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ संबंध स्थापित करता है। वास्तव में व्यक्ति में समाज के अन्य सदस्यों से संबंध स्थापित करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, जिसे वह सामाजिक अंत:क्रिया के फलस्वरुप विकसित करता है।

समाज का अर्थ

समाज केवल मनुष्यों में ही नहीं बल्कि पशु पक्षियों में भी पाया जाता है क्योंकि समूह, संबंध, सहयोग, श्रम विभाजन, प्रभुत्व, अधीनता आदि पशु पक्षियों में भी पाए जाते हैं। वस्तुतः समाज 'संबंधों का एक जाल' है, क्योंकि मानव जीवन में संबंधों, प्रतिमानों, मूल्यों, आदर्शों, प्रथाओं एवं मान्यताओं इत्यादि के रूप में विकसित जाल को ही समाज की संज्ञा दी जाती है।

समाज का अर्थ

समाजशास्त्रीय अर्थ में 'समाज' सिर्फ व्यक्तियों के किसी भी समूह से अभिप्रेत नहीं है; बल्कि, यह व्यक्तियों के बीच होने वाली अंत:क्रिया को व्याख्यायित करने वाले समृद्ध शब्द रूप से संबंधित है। समाज लोगों का एक संगठन मात्र नहीं है, और ना ही कोई वस्तु है, जिसका भौतिक स्वरूप हो। सामाज पूर्णतया एक अमूर्त संकल्पना है। समाज सर्वव्यापी है; क्योंकि जहाँ जीवन है, वहाँ संबंध है, और जहाँ संबंध है, वहाँ समाज पाया जाता है। समाज सामाजिक संबंधों की व्यवस्था है और सामाजिक संबंध सदैव परिवर्तनशील होते हैं; अत: समाज को भी एक जटिल और परिवर्तनशील व्यवस्था कहा जाता है।

समाज की कुछ परिभाषाएँ

समाज को विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न तरीके से परिभाषित किया है:-

फ्रायड के अनुसार, "समाज लोगों का समूह मात्र नहीं है बल्कि यह संबंधों का तंत्र है, जो व्यक्तियों के समूह के बीच स्थित होता है।"

समाजशास्त्री सी. एच. कूले के अनुसार, "समाज रीतियों या प्रक्रियाओं की जटिल सक्रिय संरचना है जो आपस में अन्त:क्रिया के कारण विकसित होती है तथा इसके अस्तित्व में इस प्रकार की सम्बद्धता होती है कि जो कुछ एक भाग में होता है, उसका प्रभाव शेष भागों पर भी पड़ता है।"

समाज की कुछ परिभाषाएँ

पारसंस के अनुसार, “समाज को उन मानवीय संबंधों की संपूर्ण जटिलता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो साध्य संबंधों के रूप में क्रिया करने से उत्पन्न हुए हों; वे चाहे यथार्थ हों या प्रतीकात्मक।”

मैकाइवर एवं पेज के अनुसार, “समाज, रीतियों एवं कार्य प्रणालियों की, अधिकार सत्ता एवं पारस्परिक सहायता की, अनेक समूह तथा श्रेणियों की, मानव व्यवहार के नियंत्रण तथा स्वतंत्रताओं की एक व्यवस्था है। इस सदैव परिवर्तनशील जटिल व्यवस्था को हम समाज कहते हैं। यह सामाजिक संबंधों का जाल है और यह हमेशा परिवर्तित होता रहता है।

समाज के आवश्यक तत्व

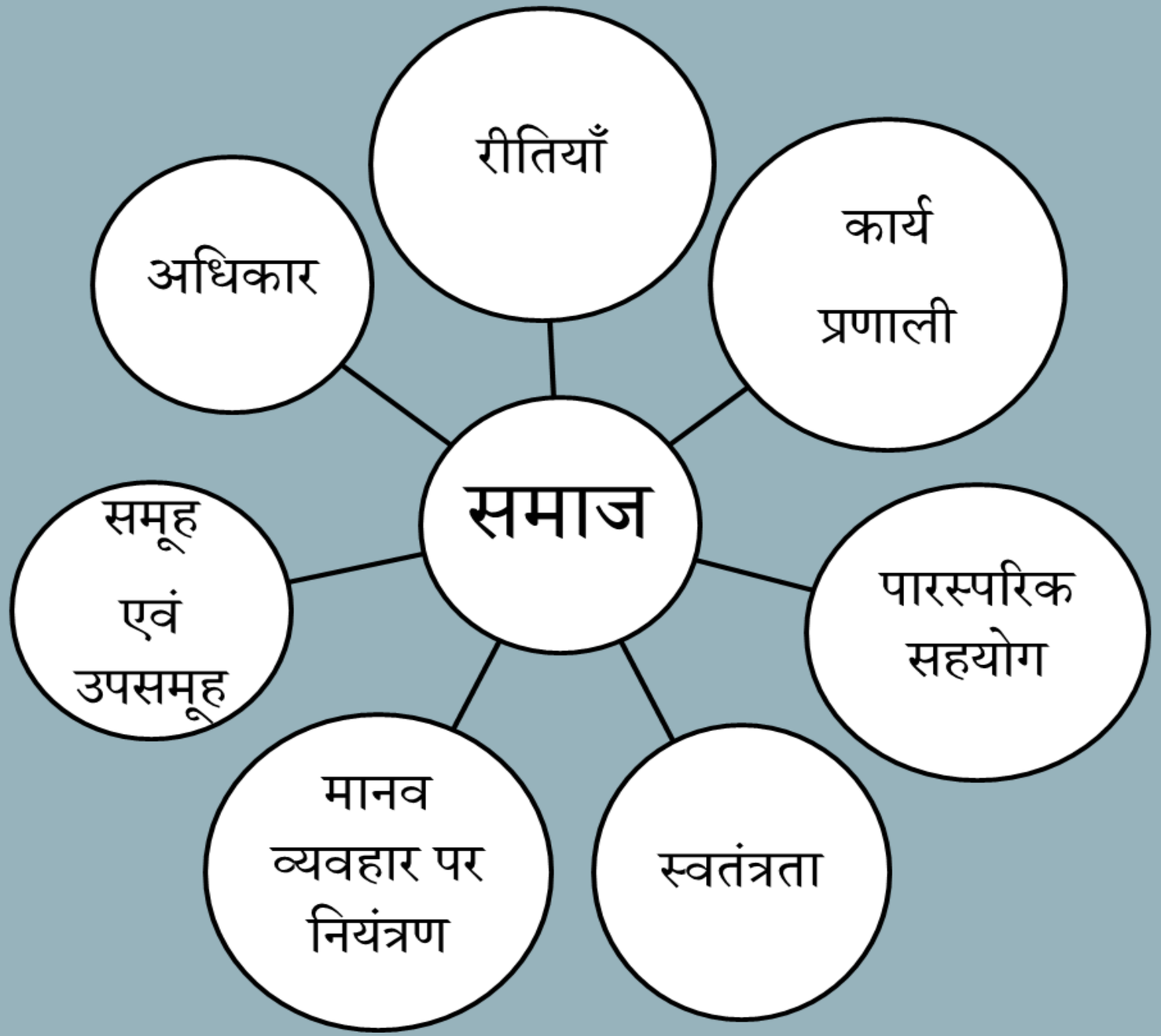

रीतियाँ या प्रथाएँ

- रीतियाँ या प्रथाएँ समाज के प्रमुख तत्व हैं। यह समाज के निर्माण के आधार के रूप में कार्य करती हैं। समाज में व्यवस्था बनाए रखने में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित अनेक रीतियाँ पाई जाती हैं, जैसे- खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा, विवाह, धर्म, जाति, शिक्षा आदि से संबंधित रीतियाँ। यह व्यक्ति को विशेष तरीके से व्यवहार करने को प्रेरित करती हैं। इसके विपरीत आचरण / व्यवहार करने व्यक्ति को समाज के अन्य सदस्यों की आलोचनाओं का पात्र बनना पड़ता है।

कार्य प्रणाली / सामाजिक संस्थाएँ

- समाज में सामूहिक रुप से कार्य करने की प्रणालियों को संस्थाओं के नाम से जाना जाता है। उन्हीं के माध्यम से एक समाज विशेष के लोग अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। एक समाज में व्यक्तियों की सभी क्रियाएं सामान्यत: इन कार्य प्रणालियों के अनुरूप ही होती हैं और इन्हीं से नियंत्रित होती हैं। प्रत्येक समाज की अपनी विशेष कार्यप्रणाली होती है, जिसका स्वरूप अन्य समाजों की कार्यप्रणाली से भिन्न होता है।

अधिकार, सत्ता या प्रभुत्व

अधिकार, सत्ता या प्रभुत्व समाज का एक प्रमुख आधार है। कोई भी ऐसा समाज दिखाई नहीं पड़ता है जिसमें प्रभुत्व एवं अधीनता के संबंध नहीं पाए जाते हैं। समाज में अनेक संगठन, समूह, समितियां आदि होते हैं, जिनके कार्य संचालन और सदस्यों के व्यवहार पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों के पास अधिकार या सत्ता का होना आवश्यक होता है, जिसके अभाव में व्यवस्था और शांति बनाए रखना सामान्यतया संभव नहीं होता है। समाज में राजनीतिक संस्थाओं का उदय भी इसी कारण से हुआ।

पारस्परिक सहयोग

पारस्परिक सहयोग समाज का एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण आधार है। जब तक व्यक्ति अपने उद्देश्यों और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक दूसरे के साथ सहयोग नहीं करेंगे तब तक समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। समाज के लिए सहयोगी संबंधों का होना अति आवश्यक है, क्योंकि कोई भी व्यवस्था परस्पर सहयोग पर ही टिकी होती है और समाज तो एक अत्यंत जटिल व विशिष्ट व्यवस्था है, जिसकी कल्पना पारस्परिक सहयोग के बिना की ही नहीं जा सकती।

समूह एवं उप समूह

एक समाज अनेक समूहों और उप-समूहों से मिलकर बना होता है। अर्थात प्रत्येक समाज में अनेक समूह, समितियां, संगठन आदि पाए जाते हैं, जिनकी सहायता से व्यक्तियों की विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। परिवार, क्रीड़ा समूह, पड़ोस, जाति, गांव, कस्बा, नगर, समुदाय, आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक संगठन, स्कूल, महाविद्यालय आदि अनेक समूह एवं विभाग हैं, जिनसे समाज बनता है और जो व्यक्तियों की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति में निरंतर सहयोग प्रदान करते हैं।

सामाजिक नियंत्रण

समाज, सामाजिक संबंधों की एक जटिल व्यवस्था है। इस व्यवस्था को ठीक से संचालित करने के लिए आवश्यक है कि मानव व्यवहार पर सामाजिक नियंत्रण रखा जाए। यदि व्यक्ति की इच्छाओं को नियंत्रित नहीं किया जाए, और उन्हें मनमाने ढंग से पूरा करने की छूट दे दी जाए तो समाज में व्यवस्था का बने रहना संभव नहीं होगा। ऐसी दशा में व्यक्ति मनमाने तरीके से व्यवहार करने लगेंगे जिससे समाज विघटित होने लगेगा। अतः मानव व्यवहार के नियंत्रण हेतु समाज में सामाजिक नियंत्रण के औपचारिक एवं अनौपचारिक साधनों को अपनाया जाना आवश्यक है।

स्वतंत्रता

समाज के एक आवश्यक तत्व के रूप में स्वतंत्रता का विशेष महत्व है। जहाँ समाज में व्यक्ति के व्यवहार को औपचारिक और अनौपचारिक साधनों द्वारा नियंत्रित किया जाता है वहीं उसे कुछ क्षेत्र में स्वतंत्रता प्रदान करना भी आवश्यक है। स्वतंत्र वातावरण में ही व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का समुचित विकास करके समाज की प्रगति में योगदान दे सकता है।

सामाजिक संस्थाएँ

- मैकाइवर एवं पेज के शब्दों में "सामूहिक क्रिया की विशेषता बतलाने वाली कार्यप्रणाली के स्थापित रूप या अवस्था को ही संस्था कहा जाता है।"
- रॉस के अनुसार, "सामाजिक संस्थाएं संगठित मानवीय संबंधों की वह व्यवस्था हैं, जो समान इच्छा द्वारा स्थापित या स्वीकृत होती हैं।"
- गिलिन एवं गिलिन के अनुसार, "सामाजिक संस्थायें, कुछ सांस्कृतिक विशेषताओं को स्पष्ट करने वाले विनियम हैं, जिनमें काफी स्थायित्व होता है और जिनका कार्य सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करना होता है।"

सामाजिक संस्थाओं की विशेषताएँ

- निश्चित नियम पद्धति
- नियंत्रण का अमूर्त्त साधन
- सामूहिक स्वीकृति पर आधारित
- सुपरिभाषित उद्देश्य
- प्रतीक
- अपेक्षाकृत अधिक स्थायित्व
- सामूहिक क्रियाओं पर आधारित
- प्राथमिक व महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति

प्रमुख सामाजिक संस्थाएँ

- पारिवारिक संस्थाएँ
- शैक्षणिक संस्थाएँ
- धार्मिक संस्थाएँ
- सांस्कृतिक संस्थाएँ
- मनोरंजनात्मक संस्थाएँ
- आर्थिक संस्थाएँ
- राजनीतिक संस्थाएँ

परिवार

परिवार सबसे छोटी सामाजिक संस्था / इकाई है।

मैकाइवर के अनुसार, ‘‘परिवार उस समूह का नाम है जिसमें स्त्री-पुरुष के पर्याप्त रूप में निश्चित और स्थायी यौन सम्बन्ध से संतान उत्पन्न होते हैं और उनका पालन पोषण भी किया जाता है।’’

किंग्सले डेविस के अनुसार, “परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो रक्त संबंध, सगोत्रता व पारिवारिक संबंध पर आधारित होता है।”

परिवार के प्रमुख कार्य

- भोजन एवं आवास का प्रबंध
- संतान उत्पत्ति एवं बच्चों का पालन-पोषण
- आर्थिक कार्य
- सामाजिक कार्य
- मनोवैज्ञानिक कार्य
- राजनीतिक कार्य
- मनोरंजनात्मक कार्य
- शिक्षा संबंधी कार्य

धर्म एवं धार्मिक संस्थाएँ

धर्म भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है, जिसका अस्तित्व आदि काल से चला आ रहा है। फ्रांसीसी समाजशास्त्री एमिल दुर्खीम कहते हैं कि धर्म पवित्र चीजों के प्रति व्यक्ति का एकीकृत विश्वास है। अधिकांश समाजशास्त्रियों ने एकमत से समाज में धर्म का महत्व स्वीकार किया है। धर्म के सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक 'सामाजिक नियंत्रण' है ।

धार्मिक संस्थाओं के कार्य

- नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास
- मूल्यों का विकास
- व्यापक दृष्टिकोण का विकास
- चारित्रिक विकास
- संस्कृति का संरक्षण एवं विकास
- बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास
- मूल-प्रवृतियों का शोधन

शैक्षिक संस्थाएँ

समाज में शैक्षिक संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। शैक्षिक संस्थाएं समाज के सम्पूर्ण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। शैक्षिक संस्थाएं बालक के समाजीकरण के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि शैक्षिक संस्थाओं के उदहारण हैं। शिक्षा हर समाज के लिए महत्वपूर्ण है। हालांकि इसके रूप प्रत्येक समाज में अलग-अलग हैं। शिक्षा के दो महत्वपूर्ण कार्य हैं:

पहला सार्वत्रिक कार्य है- समाज के सदस्यों का समाजीकरण एवं आने वाली पीढ़ी में संस्कृति का स्थानांतरण करना

तथा दूसरा बड़ा कार्य है- समाज की मानव संसाधन संबंधी आवश्यकता को पूरा करना

शैक्षिक संस्थाओं के कार्य

शैक्षिक संस्थाओं के अन्य महत्वपूर्ण कार्य:

- शारीरिक विकास
- मानसिक विकास
- सांस्कृतिक विकास
- चारित्रिक तथा नैतिक विकास
- राजनैतिक विकास
- व्यावसायिक विकास
- व्यक्तित्व विकास
- समाज के सदस्यों में नागरिकता एवं राष्ट्र प्रेम की भावना का विकास

आर्थिक संस्थाएँ

आर्थिक संस्थाओं का तात्पर्य उन नियमों, प्रक्रियाओं अथवा मानकों से है जो उत्पादन, वितरण और उपभोग संबंधी समाज की कार्यप्रणाली से जुड़े हुए हैं। प्रत्येक समाज का अस्तित्व उनकी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है। उन आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आर्थिक संस्थाएँ कार्य करती हैं, और इस प्रकार इन्हें किसी भी समाज के आधारभूत संरचना के रूप में देखा जा सकता है, जिसके ऊपर सभी अन्य सामाजिक संस्थाएं आधारित होती हैं।

आज हमने सीखा

समाज क्या है?

समाज के आवश्यक तत्व कौन कौन से हैं?

प्रमुख सामाजिक संस्थाएँ कौन सी हैं?

एवं प्रमुख सामाजिक संस्थाओं के मुख्य कार्य क्या हैं?

धन्यवाद